Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 573-576

Ekk/;fed Lrj ij v/;;ujr fo|kfFk;ksa esa i;kZoj.k dk rqyukRed v/;;u

सुमन बलौदा*

iLrkouk

प्रकृति की अद्वितीय ईश्वर प्रदत्त यदि कोई रचना है तो वह मनुष्य है किन्तु आज वही प्रकृति का रक्षक अपनी मॉ स्वरुप इस प्रकृति को अपने ही हाथों से नष्ट करने पर आमादा हो गया है। प्रकृति ने जिन संसाधनों को अपनी मनुष्य–रुपी संतान को उनका नैतिक उपयोग करने का अधिकार दिया था आज उन्ही अवयवों को मनुष्य अपनी वैज्ञानिक खोजों भोग विलासों की तृप्ती के चलते नष्ट कर रहा है जिसके कारण प्रकृति का स्वरुप दूषित ही नहीं पूरी तरह खण्डित भी हो गया है। उसकी हरियाली का ऑचल सिमट कर बडे–बडे प्रासादों, कल कारखानों और चौडी–चौडी सड़कों के रुप में दृष्टि गोचर हो रहा है ।

व्यक्ति अपनी मॉ स्वरूप प्रकृति की हरि–भरी गोद को भी सूना करने के साथ–साथ उसके अस्तित्व को भी समाप्त करने पर तुला है । सभी, पर्यावरण की गोद में खेलते हुए भी पशु–पक्षियों को भी शिकार स्वरूप कार्य में ले रहे है । अपने आस–पास के वातावरण वायु ,जल, ध्वनि, मृदा व सामाजिक आदि को विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों द्वारा गंदा किया जा रहा है।

पर्यावरण के संसाधनो का जितना दोहन किया जा रहा है उससे इसका भण्डार कम होता जा रहा है। इन संसाधनो को मानव अपने दैनिक क्रियाकलापों से प्रदूषित भी करते है अतः इसके संरक्षण के उपाय भी करने चाहिए । इसकी तरफ इस बात की भी आवश्यकता महसूस की जा रही है कि पर्यावरण के सुरक्षा के उपाय भी किये जाये । पर्यावरण के लिए शिक्षा वास्तव में एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पर्यावरण संबंधी असली और मूल मुद्दों की जानकारी प्राप्त होती है । इस प्रक्रिया को सफल बनाने के लिये सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि बच्चे इन समस्याओं के प्रति जागरूक बने और उनके संबध में गहराई से सोच विचार करें और उन्हे हल करने में जुट जाए। पर्यावरण के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने की परम आवश्यकता है जो कि बचपन से आंरभ होकर सभी अवस्थाओं और समाज के सभी वर्गो में व्यक्त होनी चाहिए। यही कारण है कि पर्यावरण अध्ययन को प्राथमिक स्तर पर एक विषय एवं उच्च स्तर पर कला, वाणिज्य और कार्यानुभव के रूप में स्थान दिया गया है ।

प्रकृति ने संपूर्ण जीवमंण्डल के लिए स्थल, जल और वायु के रुप में एक विस्तृत आवरण निर्मित किया है, जिसे हम 'पर्यावरण' की संज्ञा देते हैं। पर्यावरण के संतुलन के लिए प्रकृति ने कुछ नियम भी निर्धारित किए हैं, किंतु जब से इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतार हुआ हैं, तब से पर्यावरण संतुलन प्राकृतिक नियमों का खुला उल्लंधन शुरु हुआ है और निरंतर प्रकृति की अनदेखी के कारण आज हमारे पर्यावरण को अनेक ससमस्याओं से जूझना पड़ रहा हैं। वायु–प्रदूषण, भूमि–प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण आदि ने सम्मिलित रूप से संम्पूर्ण वातावरण को प्रदूषित कर दिया हैं और इसका परिणाम यह हुआ कि प्रकृति –प्रदत्त जीवनदायी वायु, भूमि और जलत्रितत्त्व आज जीवन–घामक बन गए हैं। पर्यावरण क्षरण एक बार फिर चर्चा में हैं इसको लेकर एक विश्वस्तरीय महासम्मेलन का आयोजन 1 से 10 दिसम्बर , 1977 तक जापान के क्योटो शहर में किया । इस सम्मेलन में जिस विषय को केंन्द्र बनाया गया, वह था विश्वव्यापी तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिग)।

---

* शोधार्थी, शिक्षा विभाग जे.जे.टी. यूनिवर्सिटी, झुन्झून्नू, राजस्थान।

औधोगिक क्रान्ति ने वायु–प्रदूषण को चिंतनीय स्थिति तक पहुँचा दिया। नवीन उधोंगों में कोयला का अंधाधुध प्रयोग षुरु हुआ ˙ कोयले का प्रयोग विद्युत उत्पादन के लिए भी होने लगा। इसके परिणामस्वरुप 19 वीं और 20 वीं सदी के आंरभ में यूरोप एवं अमेरिका के नगरों पर काला आवरण सा छाने लगाा। सेंट पीट्सबर्ग एवं पेसिलवेनिया जैसे औधोगिक नगरों में तो वायु प्रदूषण की मात्रा इतनी अधिक हो जाती थी कि वाहन चालकों को दिन में भी हेडलाइट उपयोग करना पडता था । इस संदर्भ में मध्यातव्य है कि जिस गति से औधोगिक की प्रकिया बढ रही है, उससे न्यून गति नहीं है वायु प्रदूषण में वृद्धि की ।

मनुष्य की विलासिता की प्रवृति ने अभी भी उसे प्रदूषण की गंभीरता से अवगत होने से रोके रखा है। प्रशीतन के विश्वव्यापी अनियंत्रीत प्रयोग ने वातावरण में क्लोरोफ्लोरोकार्बन गैस की मात्रा बढा दी हैं और इसके परिणामस्वरुप वायुमण्डल के ओजोन–स्तर में छिद्र हो गया हैं इससे पृथ्वी के तापमान एवं मनुष्य के स्वास्थ्य को कितना नुकसान पहुॅचेगा ,वह से परे हैं। वस्तुतः मनुष्य प्रकृति से अनुकूल के बदले प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने की जितनी चेष्टा करेगा ,वह पर्यावरण को और उसके परिणामस्वरुप चक्रीय श्रृंखला में अपनी क्षमता को ही नुकसान पहुॅचाना शुरु कर देगा ।

leL;k dk 'kh"kd

साहित्य की समीक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। शोधकर्त्ता साहित्य की समीक्षा शोध की समस्या के चयन से भी पहले प्रारम्भ कर देता है। वास्तव में साहित्य की समीक्षा शोध समस्या की पहचान और चयन में सहायता पहुॅचाती है। यदि शोधकर्त्ता ने स्वयं समस्या का चयन कर लिया है या विशेषज्ञ द्वारा बता दी गयी है तो भी उसको यह सिद्व करने के लिए कि यह एक नयी समस्या है,साहित्य का पुनर्निरीक्षण करना पड़ता है। समस्या का चयन और परिभाषित करने के पश्चात् उसको समस्या के लिए परिकल्पनायें बनानी पड़ती है। साहित्य की समीक्षा परिकल्पनाओं का आधार है। साहित्य के पुनर्निरीक्षण से विधि, प्रतिरूप साधन और सांख्यिकीय तकनीक के लिए आधार प्राप्त किये जाते है। पूर्व अध्ययनों के निष्कर्ष उसकी व्यवस्था को अनुमोदित कर सकते है। साहित्य की समीक्षा के पुनर्निरीक्षण की समस्या के चयन से अध्ययन के निष्कर्ष के लेखन तक प्रयोग किया जाता है।

चूॅकि समय के साथ–साथ ज्ञान बढ़ रहा है और शोध भी लगातार किए जा रहे है अतः शोध विद्यार्थी को अपने शोध कार्य के पूरे समय में एस क्षेत्र या साहित्य के लिए पुस्तकालय के सम्पर्क में रहना चाहिए। उसको अपने निष्कर्षों के वाद–विवाद और साहित्य की समीक्षा के अभिलेखन के समय नवीनतम ज्ञान होना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा का अभिलेख शोध अध्ययन को वैज्ञानिक और नवीनतम बनाता है तथा शोधकर्त्ता में विद्वता विकसित करता है। वह साक्षात्कार,विचार,गोष्ठियों, सभायें,अपने शिक्षण कार्य और व्यावसायिक वृद्वि में भी इसके उचित कारण बताता है। शैक्षिक शोध शिक्षा जगत में गुणात्मक स्तर पर वृद्धि का मापदण्ड माना जाता हैं शोध का लाभ है " ज्ञान के प्रति तार्किक दृष्टि का विकास " प्रस्तुत अनुसंधान का शीर्षक निम्न हैः

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन "

'kk/k dk mnns';

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उद्देश्य रखे गये हैः

- समस्या अनुसंधान का उद्देश्य वर्तमान पर्यावरण शिक्षा के प्रति व्यापक दुष्टिकोण, रूचि, जिज्ञासा को विकसित करने हेतु सुझाव व उपाय प्रस्तुत करना है जिससे बालक–बालिकाऐं लाभान्वित हो सके।
- माध्यमिक विद्यालय में बालक–बालिकाओं की पर्यावरण के प्रति रूचि का अध्ययन।
- कक्षा नवीं के स्तर पर पर्यावरण शिक्षा में रूचि का अध्ययन करना ।
- गैर सरकारी एंव सरकारी विद्यालयों में सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक परिस्थिति के परस्पर संबंध के बारे में स्पष्ट जानकारी का विकास करना एंव रूचि बनाये रखना।
- पर्यावरण के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा एंव सुधार के लिए वांछनीय ज्ञान, मूल्य, मनोवृत्ति, वचन बद्धता और कौशल प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना।

'kks/k dh ifjdYiuk,¡

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न परिकल्पनायें हैं:

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गैरसरकारी एंव सरकारी विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना में गैरसरकारी बालक एंव बालिकाओं की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना में सरकारी बालक एंव बालिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

'kks/k ds fu"d"kZ

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको से ज्ञान किया गया टी का मान 0.12 आया जो 58 डिग्री आफ फ्रीडम के लिए 0.01 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.66 और 0.05 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.00 से कम है। अर्थात सरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गैरसरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको से ज्ञान किया गया टी का मान 0.98 आया जो 58 डिग्री आफ फ्रीडम के लिए 0.01 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.66 और 0.05 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.00 से कम है। अर्थात गैरसरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गैरसरकारी एंव सरकारी विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको से ज्ञान किया गया टी का मान 1.44 आया जो 118 डिग्री आफ फ्रीडम के लिए 0.01 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.60 और 0.05 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 1.97 से कम है। अर्थात गैरसरकारी एंव सरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक एंव बालिकाओं (गैरसरकारी एंव सरकारी विद्यालय) में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको से ज्ञान किया गया टी का मान 0.58 आया जो 118 डिग्री आफ फ्रीडम के लिए 0.01 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 2.60 और 0.05 स्तर पर टी के प्रमाणिक मान 1.97 से कम है। अर्थात गैरसरकारी एंव सरकारी विद्यालय के बालक एंव बालिकाओं की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Hkfo"; esa v/;;u gsrq lq>ko

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्त्री द्वारा सरकारी एंव गैरसरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विघार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है यद्यपि यह शोध कार्य पूर्व में हुए शोध कार्यों से सर्वथा भिन्न है फिर भी पर्यावरण के संदर्भ में इसे प्रर्याप्त नहीं कहा जा सकता है, इस अध्ययन के परिणामों तथा व्याख्या के आधार पर अन्य अध्ययन भी किये जा सकते है। ये अध्ययन निम्नलिखित हो सकते हैं:

- प्रस्तुत शोध कार्य मात्र जयपुर शहर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया है। इसी प्रकार का शोध कार्य ग्रामीण विघार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य मात्र जयपुर शहर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विघार्थियों पर किया गया है। इसी प्रकार का शोध राजस्थान के समस्त शहर के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य मात्र जयपुर शहर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विघार्थियों पर किया गया है। इसी प्रकार का शोध कार्य राजस्थान के समस्त शहरी एंव ग्रामीण के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है।

- विद्यालयों में विघार्थियों द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य वृद्धि हेतु किये जा सकने वाले प्रयासों का अध्ययन।
- प्रस्तुत शोध कार्य मात्र मानव और पर्यावरण के मध्य संबंध पर किया गया है।
- विघार्थियों में स्वच्छ आदतों का अध्ययन करना।
- विद्यालयों में सफाई के स्तर का स्तर।
- विद्यालय में पीने के पानी की शुद्धता का अध्ययन।

I nHkZ xFk I ph

- शिक्षा अनुसंधान– आर. लाल बुक डिपो 1995, शर्मा आर. ए.
- शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व – विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, सुखिया एस. पी
- मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी–विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1996 डॉ वर्मा, प्रीति एवं डॉ श्रीवास्तव डी.एन
- पर्यावरण शिक्षा शिक्षण–राधा प्रकाशन मंदिर आगरा 2005–06, प्रो. एच. पी. सिंह
- पर्यावरण शिक्षा–विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, डॉ गोयल एम. के.
- पर्यावरण शिक्षण– भार्गव पब्लिकेशन ग्वालियर, डॉ रीता शर्मा एवं डॉ सरोज ग्रुवरेले
- पर्यावरण अध्ययन भाग 1– म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल
- पर्यावरण शिक्षण– पुनीत प्रकाशन, डॉ नवप्रभात गोस्वामी एवं प्रकाश नारायण नाटाणी
- पर्यावरण अध्ययन– पंचयशील प्रकाशन, डॉ रामकुमार गुर्जर एवं डॉ बी.सी.जाट
- पर्यावरण अध्ययन– आस्था प्रकाशन, डॉ मनोज कुमार यादव एवं डॉ अनुपमा यादव
- सामाजिक पर्यावरण शिक्षण– जैन प्रकाशन मंदिर, अरुणकुमार राजोरिया
- पर्यावरण शिक्षण–पर्यावरण अध्ययन , डॉ कमला वशिष्ठ
- सामाजिक पर्यावरण अध्ययन शिक्षण–राधा प्रकाशन मंदिर हनुमान सहाय शर्मा एवं एच.एस. शर्मा
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण–तरुण प्रकाशन, डॉ के.सी. जांगिड एवं शंकर लाल कसवा
- भौतिक और जैविक पर्यावरण–राधा प्रकाशन मंदिर , डॉ एच.पी. सिंह एवं एच.एस. शर्मा
- भौतिक और जैविक पर्यावरण शिक्षण– जैन प्रकाशन मंदिर , जयेन्द्र शेखर गुप्ता
- पर्यावरणीय अध्ययन– पर्यावरण अध्ययन ,डॉ के.जी. सक्सेना , अनिल गुप्ता एवं डॉ चादंनी कृपलानी
- पर्यावरण शिक्षा शिक्षण– राधा प्रकाशन मंदिर , एच.एस. शर्मा एवं डॉ एच.पी. सिंह
- पर्यावरण शिक्षा –शिक्षा प्रकाशन , डॉ मंजू शर्मा एवं डॉ राजेश कुमार चौहान
- पर्यावरण शिक्षा–जैन प्रकाशन मंदिर , डॉ नरेन्द्र सिंह बैस ,डॉ सुनिता भार्गव एवं संजय दत्त
- पर्यावरणीय अध्ययन एवं शिक्षा–स्वाति पब्लिकेशनस ,डॉ प्यारेलाल चौधरी
- पर्यावरणीय और प्राकृतिक संसाधन–स्टार पब्लिकेशनस, संजय तिवारी

Ikf=dk,¡&ifjdYiuk,¡

- राष्ट्रीय पर्यावरण जागरुकता अभियान 2002 जिला भिण्ड म.प्र.– वसुन्धरा।
- विश्व पर्यावरण दिवस पर नई दिल्ली–विज्ञान प्रगति।
- पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, अहमदाबाद, पक्षी निरीक्षण पुस्तिका–प्रकृति परिचय श्रृखंला–1।
- मानव विकास मंत्रालय पर्यावरण षिाक्षा केन्द्र पष्चिम भारत सी. ई. ई., पक्षी निरीक्षण पुस्तिका– प्रकृति परिचय श्रृखंला –4
- राष्ट्रीय हरित कोर योजना ई. को. क्लब जिला ग्वालियर –पर्यावरण मित्र
- पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन ई–5 एरेरा कालोनी भोपाल वेटलैण्ड – हमारी अनमोल धरोवर

☯☯☯